॥ श्रीः ॥

महामृत्युंजयजपविधि ।

प्रयोगविधि–हवनविधि, संकल्पविधि, शिव-
पूजनविधि, त्र्यक्षरीजपविधि, भूतशुद्धि,
प्राणप्रतिष्ठा आदि संयुक्त,

हनूमानशर्मा संकलित.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
मालिक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " प्रेस,
कल्याण–मुंबई.

संवत् १९८५, शके १८५०.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मुद्रक और प्रकाशक—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक—"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, कल्याण—मुंबई.

सन १८६७ के आक्ट २५ के अनुसार रजिष्टरी सब हक्क
प्रकाशकने अपने अधीन रखा है.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

परिवारयुताय सांबशिवाय नमः ।

श्री लक्ष्मी...
देवप्रयाग (...)
व्यवस्थापक-पं. चक्रधर जोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रस्तावना ।

इस देशमें महामृत्युञ्जय प्रयोगका प्रचार बहुत है । अनुष्ठानी ब्राह्मण इस प्रयोगसे अनेकों कार्य सिद्ध करते हैं । पहले यह विधि अनुष्ठानियोंके पासही उपलब्ध होती थी और साधारण ब्राह्मण इससे अनभिज्ञ होरहे थे. यह देखकर पहले पहल मैंने संवत् १९५९ में इस प्रयोगविधिको कल्याणके "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" प्रेसमें छपवादी । इसकी प्रथमावृत्ति इतनी जल्दी बिकी की दुबारा शुद्ध कर भेजनेके पहलेही उसकी दो आवृत्ति छप गई. तब मैंने संवत् १९६२ में इसकी कुछ विशेष उपयोगी और शुद्ध प्रति बंबईके श्रीवेंकटेश्वर प्रेसमें भेजी । वहां यह संवत् १९६२-६७-७२ और ७४ में शुद्धता पूर्वक छपती रही । इसके अधिक प्रचारको देख कर बंबईके हरिप्रसाद भगीरथजीने भी इसे छापी, किन्तु अनधिकाररूपमें मुझसे बिना पूछे छापनेके परिणाम यह हुआ कि उनकी सं० १९७३ की छपी पुस्तकें महा अशुद्ध छपगईं । इसका प्रचार इस देशमें बहुत है और कामना सिद्धिके लिये लोग इसपर बहुत विश्वास, भक्ति, श्रद्धा रखते हैं. इससे प्रयोग संबंधी बहुतसे विषय इसमें संयुक्त कर दिये गये हैं। आशा है कि, सर्व साधारणको इससे अधिक लाभ होगा और वे उचितरूपसे इसको उपयोगमें लेंगे ।

निवेदक—हनूमानशर्मा, जयपुरसिटी.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

महामृत्युंजयके उपयोगी विषय ।

१ प्रयोगका प्रयोजन ।

महामृत्युंजयका प्रयोग नीचे लिखे कामोंमें प्रयोजनीय होता है (१) यदि जन्म, मास, गोचराष्टक और दशा विदशा आदिमें ग्रहजन्य पीडा होनेका योग हो (२) किसी महा-रोगसे कोई पीडित हो (३) भाई आदिका वियोग होरहाहो (४) नगरमें महामारी आदिसे लोग मर रहे हों (५) राज्य जाता रहा हो (६) धनहीनताकी ग्लानि हो (७) किसीने शीघ्र मृत्यु होनेकी कहदी हो (८) मेलापकमें नाडीदोष आता हो (९) राजभय हो (१०) मनके धर्मका विपर्यय होगया हो (११) राष्ट्रके टुकडे हो गये हों (१२) मनुष्योंसे परस्परमें घोर क्लेश होरहा हो (१३) और त्रिदोष जन्य दुर्निवार्य रोग हों तो ऐसे अवसरोंमें यथाप्रमित और यथाविधि महामृत्युंजयके जप करवाने चाहिये ॥

२ कार्यके अनुसार प्रयोगका प्रमाण ।

(१) यदि किसी प्रकारकी महामारी आदिसे या अन्य प्रकारसे देशमें महाउपद्रव या अशांति होरही हो तो ऐसे कामोंकी रोकके लिये महामृत्युंजयके एक करोड जप कराने

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चाहिये (२) यदि किसी प्रकारका सामान्य रोग हो, खोटा स्वप्न हुआ हो या और कुछ भय हो तो सवा लाख जप कराने चाहिये । (३) यदि अपमृत्युका भय हो अथवा कुछ संदिग्ध दुर्वार्ता सुनी हो तो दश हजार जप कराने चाहिये । (४) यदि कुछ यात्राका भय हो तो एक हजार जप कराने चाहिये । (५) और अभीष्टसिद्धिके लिये पुत्रप्राप्तिके लिये राज्यपद प्राप्तिके लिये अथवा यथेच्छ मान सन्मान या धनलाभादिके लिये सवा लक्षका पुरश्चरण कराना चाहिये ॥

३ प्रयोगविधि ।

(१) कोईभी प्रयोग किसी कार्यके निमित्त किया जाय उसको शास्त्रोक्त विधिके अनुसार यथासमयही करना चाहिये। आपत्तिसे ग्रसित होजाने पर मनमाने मार्गसे उटपटांग काम करना अच्छा नहीं । (२) कदाचित् किसी कार्यविशेषके कारण विवश होकर अचानक सहसा प्रयोग करानेका प्रयोजन पडजाय तो उस समय अच्छी वेलामें इसका तात्कालिक प्रयोग कराना चाहिये और यदि (३) सब प्रकारकी सानुकूलता हो और किसी महत्प्रयोजनीय कार्यसिद्धिके लिये प्रयोग कराना हो तो मुहूर्तज्ञ ज्योतिषीसे चन्द्र तारादि बलसंयुक्त अच्छे मुहूर्तका दिन निश्चय करवाके शिवालय या सौम्य देवालय अथवा किसी सिद्धस्थानकी कल्पना करके

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

उसको झाड बुहार लीप पोत धोकर आसन भूमिका कूर्म-शोधन और दीपस्थानको शुद्ध करे। (४) मुहूर्तके प्रथम दिन गायत्री जपादिसे प्रायश्चित्त करके मुहूर्तके दिन प्रातःकाल स्नान संध्या देवपूजा आदि नित्यकृत्यसे निबटकर प्रयोग करनेके स्थानमें अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन, प्राणायाम, शान्तिपाठ और देवप्रणामादि करके स्वस्थचित्त और एकाग्र मन होकर जप करे (५) कदाचित् पार्थिव पूजापूर्वक जप करने हों तो लिखित विधिके अनुसार मृन्मय महादेव (शिवलिंग) बनाकर उसकी पूजा करके उसीके सान्निध्य संकल्पकर जप करे और यदि मूर्ति मौजूद हो तो उसकी पूजा करके जप करे । (६) जप करनेवाला ब्राह्मण शुद्धचेता, प्रयोगविधिका ज्ञाता, निर्वैर, उदार, दयालु, परोप-कारी, अनुष्ठानी, देवाराधक और स्वार्थशून्य होना चाहिये । कदाचित् ब्राह्मणोंकी संख्या एकसे अधिक हो तो वे भी उप-रोक्त गुणसंयुक्त विषम संख्यात्मक होने चाहिये । (७) प्रयोग यदि स्वयं करे तब तो कहनाही क्या है ? और यदि दूसरोंके द्वारा यजमानकी ओरसे हो तो यजमानका चित्त भी शुद्ध, शांत, विश्वास रखनेवाला और मोल तौल न लगानेवाला होना चाहिये । (८) प्रयोगके जपोंकी संख्या तथा स्थान, आसन, अशन और समय ये सब सदैव समान रहने चाहिये । विषम-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तासे विक्षेप होजानेका संभव है।(९)प्रयोग यदि पुरश्चरणात्मक हो तो समाप्तिके समय जप संख्याके दशांशप्रमित हवन; हवन-संख्याके दशांशप्रमित तर्पण, तर्पण संख्याके दशांश प्रमित मार्जन और मार्जनसंख्याके दशांश प्रमित (या कार्यानुसार न्यूनाधिक) ब्राह्मण भोजन करना चाहिये।(१०)और प्रयोग यदि एकही दिनका हो और हवनादि हो न सकें तो उस प्रमाणके जप अधिक करदेने चाहिये ।ऐसा करनेसे अवश्य कार्यसिद्धि होती है । वर्तमान समयमें विधर्मियोंके संसर्गसे लोगोंके विचार बहुत बदल गये हैं। धर्म, कर्म और सदनुष्ठानोंमें लोगोंकी श्रद्धा हीन होजाती है। ऐसे कामोंके करने-करानेवाले,दोनोंही स्वार्थपरायण और विश्वासहीन होगये हैं । ऐसी अवस्थामें जो कुछ होताहै समयोचितही होताहै। किन्तु ऐसा होनेसे भारतीय सदनुष्ठानोंकी प्रतिभा प्रच्छन्न होतीजाती है और निरर्थक कामोंमें व्यर्थ अर्थव्यय करनेकी गति बढती है । अतः अपनी इस सम्पत्तिको सुरक्षित रखनेके लिये ब्राह्मणोंको भी जरा आगेकी सोचकर निःस्वार्थी और परोपकारीपनेकी प्रकृति रखनी चाहिये ॥

४ हवनविधि ।

(१) जप हो चुके तब होमानुसार वेदी बनवाके उसपर कुशकण्डीके क्रमानुसार अग्नि स्थापन करके शास्त्रोक्त

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विधिसे यथापरिमित यथोचित द्रव्यका होम करना चाहिये। सामान्य हवनमें तिल, यव, घी, खाण्ड और मेवा यही मुख्य हैं किन्तु कामनाविशेषके लिये हवन भी कई द्रव्योंका करना होताहै। (२) सवालक्षका पुरश्चरण किया हो तो उसमें बिल्वफल, तिल, खीर, सरसों, दूध, दही, दूर्वा, बट, पलास और खैरकी समिध इनको सहदमें डुबोकर यथाक्रम हवन करना चाहिये। (३) यदि किसी प्रकारकी रोग व्याधि दूर करनी हो या शत्रुसे विजय पाना हो अथवा धन सम्पत्ति और पुत्रपौत्रादि सहित दीर्घायुषी होनेकी कामना हो तो सुधावल्ली (गिलोय) की बेलके ४-४ अंगुलके टुकडोंका हवन करे (४) लक्ष्मी प्राप्तिकी कामना हो तो बिल्वफलका हवन करे (५) ब्रह्मत्व सिद्ध करना हो तो पलाश (छीले) की समिधोंका होम करे। (६) धन-प्राप्तिकी इच्छाहो तो बटकी (७) कान्ति बढानी हो तो खैरी की (८) अधर्म (पाप) का नाश करना हो तो तिलोंकी (९) शत्रुका नाश करना हो तो सरसोंकी (१०) यश और श्रीकी इच्छा हो तो खीरकी (११) कृत्या (मृत्यु) का क्षय करना हो तो दही-की, (१२) रोगक्षय करना हो तो तीन तीन दूर्वाओंकी (१३) यदि प्रबल ज्वरको दूर करना हो तो अपामार्ग अर्थात औंधाको राकी अग्निसे पकायी हुई खीरकी (१४) किसीको वश करना-हो तो गायके दूध और घीसे मिली हुई दूर्वांकुरोंकी।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

और (१९) सर्व प्रकारके रोगोंसे मुक्त होना हो तो काश्मरीकी तीन तीन समिध तथा दूध और अन्नकी आहुतियोंसे हवन करे । हवनकी प्रत्येक आहुतिमें स्वाहाशब्द कहे और होमके पीछे एक पात्रमें जल और दूध मिलाकर उसमेंसे अंजलीमें या अर्घमें जल लेकर " महामृत्युंजयं तर्पयामि " अथवा "अमुकं तर्पयामि" यह उच्चारण करता हुआ तर्पण करे और दुर्वांकुरोंसे जल ले लेकर अपना आप किया हो तो अपने शरीर पर और यजमानकी ओरसे किया हो तो यजमानके शरीर पर दशांश संख्यामित मार्जन करे ॥

९ संकल्पविधि ।

(१) विद्वानोंको किसी विषयकी विधि बताना आवश्यक नहीं किन्तु सर्वसाधारणके लिये लिखना पडता है कि, सब कामोंकी संकल्पहीसे सिद्धि होती है और साधारण लोग बहुधा संकल्पमें विकल्प करदेते हैं । अतः स्मरण रखना चाहिये कि, किसी भी कामनाके लिये यजमानकी ओरसे अनुष्ठान होता हो तो कार्यारंभके पहले कामनाका संबोधन करके यजमानके हाथसे संकल्प करवाकर फिर प्रतिवार करनेवालेको संकल्प करना चाहिये और आप अपने लिये करे तो प्रतिदिन स्वयं संकल्प करना चाहिये ।(२) संकल्पकी कल्प-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नामें यह ध्यान रखना चाहिये कि, किस कामनाके लिये, किसकी ओरसे क्या काम, किसके द्वारा कितना किया जाताहै । इन बातोंका व्याकरणके अनुसार शुद्ध परिज्ञान करके संकल्प करना चाहिये । उदाहरणार्थ यहाँ दो चार संकल्प लिख भी देते हैं । यथा–(३) "ॐतत्सदद्येत्यादि० अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणतन्त्रोक्तफलावाप्तये मम जन्मवर्ष-मास-दिन-गोचराष्टक-वर्ग-दशान्तर्दशादिषु ये अनिष्टफलकारका ग्रहास्तेषां सानुकूलार्थं सकलाधिव्याधिझटितिप्रशमनपूर्वकदीर्घायुष्यबलपुष्टिनैरुज्यादिसकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयप्रीत्यर्थं अमुक (शतसहस्रायुतलक्षादि) संख्यया श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजमपहं करिष्ये (वा विप्रद्वारा कारयिष्ये)। (४) अथवा " विषूचिकादिजनमारोपसर्गशांत्यर्थं " वा (५) " वृष्टिकामार्थं " वा (६) " अमुकाभियोगनिवृत्त्यर्थं वा (७) "अमुक दुःस्वप्ननिरसनार्थं" (८) अमुकदिग्यात्रानिर्विघ्नपूर्वकसिद्ध्यर्थं" (९) "प्रतिसन्मुखशुक्रदोषदूरीकरणार्थं " (१०) " काकमैथुनदर्शनादिसूचितसर्वारिष्टनिवृत्त्यर्थं" (११) "पल्लीपतनसरठारोहेणामुकदुष्टांगस्फुरणजनिताशुभफलविनाशार्थं" (१२) अथवा " दीर्घायुः पुत्रप्राप्त्यर्थं" (१३) "यथेच्छधनलाभार्थं" (१४) "अमुकपदप्राप्त्यर्थं" (१५) " अमुककामनासिद्ध्यर्थं " अमुक

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

संख्यापरिमितश्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये (वा ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये) इस प्रकार जो आवश्यक हो वही कल्पना करके संकल्प करना चाहिये ॥

६ पार्थिवपूजाविधि ।

शास्त्रमें मृत्तिकाकी शिवमूर्ति बनाकर उसकी प्रतिदिन पूजन करनेका महाफल लिखा है। पुत्रादि कामनाओंके निमित्त भी नित्य शिवलिंग निर्माण करके उसके समीप जप करनेसे अवश्य कार्यसिद्धि होती है। यहां उसकी निर्माण विधि लिखते हैं--

"आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा अमुककामोहं पार्थिवलिंगपूजां करिष्ये। इति संकल्प्य विभूतिरुद्राक्षधारणं कृत्वा "सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्। ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिंगार्थं भव सुप्रभे॥" इति भूमिं प्रार्थ्य ॐ ह्रांपृथिव्यै नम इति षड्वर्णेनाभिमंत्र्य ॐहरायनम इति शुचिस्थानान्मृदमाहृत्य 'वं' इत्यमृतबीजाभिमंत्रितजलप्रक्षेपेण संपीड्य तेन पिण्डेन ॐ महेश्वराय नम इति लिंगं कृत्वा स्वपुरतः ॐ शूलपाणये नम इति पीठादौ प्रतिष्ठाप्य ततः ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणा-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ख्या देवता आंबीजं ह्रींशक्तिः क्रौंकीलकम् देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः । ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुः-सामानिच्छंदोभ्यो नमो मुखे । प्राणाख्यदेवतायै नमो हृदि । आंबीजाय नमो गुह्ये।ह्रींशक्तये नमःपादयोः। क्रौंकीलकाय नमः सर्वांगे । इति कृत्वा पुष्पादिना शिवलिंगं स्पृशन् । ॐ आंह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसंहंसः सोहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः । ॐ आंह्रीं क्रौं यंरंलंवंशंषंसं हंसः शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आंह्रीं क्रौंयंरंलंवंशंषंसंहंसःशिवस्य सर्वेन्द्रियाणि । ॐ वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा । एवं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा स्थापितं शिवलिंगं पुनः स्पृशन् ॐ भूःपुरुषं सांबसदाशिवमावाहयामि ॐ भुवः-पुरुषं सांबसदाशिवमावाहयामि । ॐ स्वःपुरुषं सांबसदाशि-वमावाहयामि। इत्यावाह्य "पिनाकधारिणे नमः" इति स्नानम् । शिवाय नमः इति गंधपुष्पाक्षतादिना संपूज्य। पशुपतये नमः इति नीराजनम् । महादेवाय नमः इति संहारमुद्रया जपान्ते विसर्जनम् । इति ॥

१इस प्रकार प्रतिदिन पार्थिवपूजन और विसर्जन करना चाहि-ये। किन्तु यदि जप करने हों तो पूजन किये पीछे जप करके फिर विसर्जन करना चाहिये । और प्रयोग समाप्तहुये पीछे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

७ शिवपूजाविधि ।

यदि शिवालयमें शिवमूर्तिके समीप महामृत्युंजयके जप करने हों या रुद्राभिषेक अथवा सहस्रघटाभिषेकादि करने हों तो स्थापित शिवमूर्तिका नीचेलिखे अनुसार पूजन करनाचाहिये ।

" शिवालयं गत्वा शिवसमीपे उपविश्य पूजनसामग्रीमवलोक्य आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य । अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा अमुककामोहं शिवपूजां करिष्ये । तत्रादौ गणेशगौर्यादीनां नाममंत्रेण संपूज्य शिवपूजनं कुर्यात् । तद्यथा—ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥ अथोयेऽअस्य सत्वानो हंतेभ्योऽकरं नमः । (शिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि) ॥ १ ॥ ॐ गायत्री त्रिष्टुप्जगत्यनुष्टुप्पंक्त्या सह बृहत्युष्णीहा ककुप्सूचीभिः । सम्यन्तुत्वा (शिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि) ॥ २ ॥ एवं चतुर्थ्यंतेन सर्वत्र । ॐ त्र्यंम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ इत्याचमनम् ॥ ३ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो वरुणस्यऋतसदन्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋत-

---

प्रतिदिन सुपूजित शिवलिंगोंको किसी एकान्त स्थानके वापी कूप तालाब अथवा महानदमें रखदेने चाहिये ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सदनमासीद इतिजलस्नानम् ॥४॥ॐपयः पृथिव्यांपयऽओष-
धीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशःसन्तुम-
ह्यम् ।(इति पयःस्नानम्) ॥५॥ ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिष-
ञ्जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयु ᳫं
षितारिषत्। (इति दधि०) ॥ ६ ॥ घृतङ्घृतपावानः
पिबतव्वसांव्वसापावानः पिबता-तरिक्षस्य हविरसिस्वाहा
दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा ।(इति-
घृत०) ॥७॥ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्तिसिन्धवः। मा-
ध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवᳫंरजः।
मधुद्यौरस्तुनःपिता। मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तुसूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तुनः।(इति मधुस्नानम्) ॥८॥ ॐ अपाᳫं
रसमुद्वयस ᳫंसूर्य्येसन्तᳫं समाहितम्। अपाᳫंरसस्ययोरसस्तं
वगृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते
योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्। (इति शर्करास्नानम्) ॥ ९ ॥
ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्तिसस्रोतसः। सरस्वतीतु
पञ्चधासो देशे भवत्सरित् (इति पञ्चामृतस्नानम्) ॥१०॥
ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्ये
ताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्तारौद्रान-
भौरूपाःपार्ज्जन्याः (इति शुद्धोदकस्नानम्) ॥११॥ ॐप्रमुञ्च
न्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्।याश्चते हस्तऽइषवःपराताभगवो-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वप ।(इति वस्त्रं कौपीनं च) ॥१२॥ ॐब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमाअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः । (इति यज्ञोपवीतम्) ॥१३॥ ॐ नमःश्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चवो नमोनमो भवायचरुद्रायच नमःशर्वायच पशुपतये च नमोनीलग्रीवायचशितिकण्ठायच नमःकपर्दिने (इति गंधम्) ॥१४॥ ॐनमःशम्भवायच भवोभवायच नमः शंकरायच मयस्करायच नमःशिवायच शिवतरायच । (इत्यक्षताः)।१५।ॐनमः पार्य्याचावार्य्यायच नमः प्रतरणाय चोत्तरणायच नमस्तीर्थ्याय च कूल्यायचनमः शष्प्यायचफेन्यायच नमः । (इति पुष्पाणि) ॥ १६ ॥ ॐ नमोबिल्मिने चकवचिनेचनमो वर्म्मिणेचवरूथिनेच नमः श्रुतायचश्रुतसेनायच नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्यायच नमो घृष्णवे । (इति बिल्वपत्राणि) ॥१७॥ ॐनमः कपर्दिनेच व्युप्तकेशायचनमः सहस्राक्षायच शतधन्वनेच नमो गिरिशयाय चशिपिविष्टायच नमो मीढुष्टमाय चषुमतेच नमो ह्रस्वाय । (इति धूपम्) ॥ १८ ॥ ॐ नमः आशवेचाजिरायच नमः शीघ्रियाय चशीभ्यायच नमः ऊर्म्याय चावस्वन्याय नमो नादेयाय चद्वीप्याय च । (इति दीपम्) ॥ १९॥ ॐनमो ज्येष्ठायच कनिष्ठायच नमः पूर्वजाय चापरजायच नमो मध्यमाय चाप्रगल्भायच नमो जघन्यायच बुध्न्यायचनमःसोभ्यायच । (इति नैवे-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यम्) ॥ २० ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ (इत्याचमनम्) ॥ २१ ॥ ॐ इमा रुद्राय तवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहे मतीः यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् । (इति तांबूलम्) ॥२२ ॥ ॐहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम । (इति दक्षिणाम्) ॥ २३ ॥ ततो घृतवर्त्तिकेन कर्पूरेणवा आरार्तिकां कुर्यात् । इति पूजाविधिः ॥

८ शिवनीराजनार्तिः ।

जय गंगाधर हर जय गिरिजाधीशा । त्वं मा पालय नित्यं कृपया जगदीशा । हर हर हर महादेव ॥ १ ॥ कैलास गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने । गुंजति मधुकरपुंजे कुंजवने

---

१ उपरोक्त अंग प्रायः शिवसंबंधी सभी प्रयोगोंके उपयोगी है । अतः महामृत्युंजयके अतिरिक्त रुद्राभिषेक सहस्रघटाभिषेक और त्र्यक्षरी पुरश्चरणादिमें भी इसके अनुसार काम करनेसे अभीष्ट फल मिलता है और यह शिवपूजन विधि भी प्रायः नित्य और नैमित्तिक सभी अवसरोंमें पूजन करने योग्य है ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गहने । कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता । रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता । हर ३ महादेव ॥ २ ॥ तस्मिन् ललितसुदश शालामणिरचिता । तन्मध्ये हरनिकटे गौरीमुदसहिता । क्रीडा रचयति भूषारंजितनिजमीशम् । इंद्रादिकसुरसेवित नामयते शीशम् ॥ ३ ॥ कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितम् । त्रिनयन शशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम् । सुंदरजटाकलापं पावकयुतभालम् । डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम् । हर० ३ ॥४॥ मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतं वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम् । सुंदरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् । इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम् ॥ ५ ॥ इति ॥ ततो हस्ते फलपुष्पाक्षतान् गृहीत्वा । ॐ यज्ञेन यज्ञमजयन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ मंत्रपुष्पांजलिं दद्यात् । यानि कानि च पापानीति प्रदक्षिणा । अंगहीनेति क्षमाप्रार्थनां कुर्यात् । इति हनूमान्शर्मासंगृहीत महामृत्युंजयमंत्रस्योपयुक्तं पूर्वांगं समाप्तम् ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अथ महामृत्युंजयजपविधिः ।

कृतनित्यक्रियो जपकर्ता[1] स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य धृतरुद्राक्षभस्मत्रिपुण्ड्रः आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य मम (वा यजमानस्य) अमुककामनासिद्धयर्थं श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य अमुकसंख्यापरिमितजपमहं करिष्ये । इति प्रत्याहिकं संकल्पः । ॐगुरवे नमः । ॐगणपतये नमः । ॐइष्टदेवतायै नमः । इति नत्वा यथोक्तविधिना भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् ।

---

१ जप करनेवाला नित्यक्रिया किये पीछे कृष्णाजिन व्याघ्रचर्म, कुशा और दर्भा तथा ऊन इनमेंसे यथोचित आसनपर पूर्व या उत्तर मुख बैठकर गुरु, गणेश और इष्टदेवका ध्यानके पूर्वोक्त "संकलपविधि" में कहेहुए प्रकारसे प्रतिज्ञा'संकल्प करके पहले भूतशुद्धि और प्राणप्रतिष्ठा करे॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

९ भूतशुद्धिः ।

ॐतत्सदद्येत्यादि० मम अमुकप्रयोगसिद्ध्यर्थं भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च करिष्ये । ॐआधार शक्तिकमलासनाय नमः इत्यासनं संपूज्य । पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः कूर्मोदेवता सुतलं छन्दः आसने विनियोगः । "पृथिव त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।" गंधपुष्पादिना

---

१ महामृत्युंजयादि अनुष्ठानोंमें उनकी साधनाके कोई २ अंग बडे क्लिष्ट होते हैं । उनको यथोक्त विधिसे करना आजकलके लोगोंके लिये महाकठिन है । यहां इस भूतशुद्धिको ही देखिये, इसका यथावत् करना सबके लिये असंभव है । जिनको प्राणायामके चढाने उतारने और रोकनेका अच्छा अभ्यास हो और वे उसके द्वारा अपने शरीरके किसीभी अंगके जीवको वहांसे हटाकर दूसरे स्थानमें रोक रखनेकी सामर्थ्य रखते हों वही यह भूतशुद्धि करसकते हैं;

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पृथ्वीं संपूज्य कमलासनया भूतशुद्धिं कुर्यात्
अन्यत्र कामना भेदेन अन्यासनयापि कुर्यात्।
तत्रायं क्रमः ।

पादादि जानुपर्यंतं पृथ्वीस्थानं तच्चतुरस्रं पीतवर्णं ब्रह्मदैवतं वमितिबीजयुक्तं ध्यायेत् । जान्वादिनाभिपर्यंतं आपस्थानं तच्चार्द्धचंद्रा-

---

–अन्यथा ध्यानमात्र करलेनाही अच्छा है । यह शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पाँच महाभूतोंसे बना हुआ है इसके जिस २ अंगमें इन भूतोंका आधिपत्य एवं संचार है और जहां २ यह निजस्वभावके अनुसार कार्य करते हैं उन स्थानोंके स्वरूपका यथावत् अवलोकन करके पृथ्वी आदि तत्त्वोंको एक दूसरेमें मिलाने स्थिर रखने और फिर सबको यथास्थान करनेसे भूतशुद्धि अर्थात् प्राणवायुकी शुद्धि होती है ऐसा करनेसे वह मनुष्य महर्षि तुल्य होकर दैवीशक्तिसे संयुक्त होजाता है और फिर उसके किये हुए प्रायः सभी प्रयोग सफल होसकते हैं ।

१ शरीरमें पाँवोंसे जंघापर्यन्त पृथ्वीस्थान चौकोर, पीत-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कारं शुक्लवर्णं पद्मलांछितं विष्णुदैवतं लमिति बीजयुक्तं ध्यायेत् । नाभ्यादि कंठपर्यन्तं अग्निस्थानं त्रिकोणाकारं रक्तवर्णं स्वस्तिकलांछितं रुद्रदैवतं रमितिबीजयुक्तं ध्यायेत् । कण्ठादि भ्रूपर्यंतं वायुस्थानं षट्कोणाकारं षड्बिंदुलांछितं कृष्णवर्णं ईश्वरदैवतं यमिति बीजयुक्तं ध्यायेत् । भ्रूमध्यादि ब्रह्मरंध्रपर्यन्तं आकाशस्थानं वृत्ताकारं ध्वजलांछितं सदाशिवदैवतं हमिति बीजयुक्तं ध्यायेत् । एवं स्वशरीरे

–वर्ण, ब्रह्मदैवत, वज्राचिह्न और वं बीजसे युक्त है । जंघाते नाभिपर्यन्त जलस्थान, अर्द्धचंद्राकार श्वेतवर्ण, कमलचिह्नसे युक्त विष्णुदैवत और लंबीजका है । नाभिसे कंठतक अग्निस्थान, त्रिकोण, रक्तवर्ण, स्वस्तिकसे चिह्नित, रुद्रदैवत और रं बीजसे युक्त है । कंठसे भ्रूपर्यंत वायुस्थान षट्कोण, कृष्णवर्ण छबिन्दुसे चिह्नित, ईश्वरदैवत और यं बीजसंयुक्त है और भ्रूसे कपालतक आकाशस्थान गोलाकार, ध्वजलांछित, धूम्रवर्ण, सदाशिव दैवत और हं बीजसे संयुक्त है ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पञ्चमहाभूतानि ध्यात्वा प्रविलापनं कुर्यात् । तद्यथा पृथ्वीमप्सु । अपोऽग्नौ । अग्निं वायौ । वायुमाकाशे । आकाशं तन्मात्राऽहंकारमहदात्मिकायां मातृकासंज्ञकशब्दब्रह्मस्वरूपायां हृल्लेखार्द्धभूतायां प्रकृतिमायायां प्रविलापयामि । तथा त्रिविधां मायां च नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावे स्वात्मप्रकाशरूप सत्यज्ञानानन्तानंदलक्षणे परकारणे परमार्थभूते परब्रह्मणि प्रविलापयामि । तच्च नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावं सच्चिदानन्दस्वरूपं परिपूर्णं ब्रह्मैवाहमस्मीति भावयेत् । एवं ध्यात्वा । यथोक्तस्वरूपात् प्रणवात्मकात् परब्रह्मणः सकाशात् हृल्लेखार्द्धभूता सर्वमंत्रमयी मातृकासंज्ञका शब्दब्रह्मात्मिका महदहङ्कारादिपञ्चतन्मात्रादिसमस्तप्रपञ्चकारणभूता प्रकृतिरूपा माया रज्जुसर्प-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वत् विवर्तरूपेण प्रादुर्भूता इति ध्यात्वा। तस्या मायायाः सकाशात् यथोक्तमाकाशमुत्पन्नम् आकाशाद्वायुरुत्पन्नः । वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथ्वी समजायत इति ध्यात्वा । तेभ्यः पञ्चमहाभूतेभ्यः सकाशात् स्वशीरं तेजः-पुञ्जात्मकं पुरुषार्थसाधनदेवयोग्यमुत्पन्नमिति ध्यात्वा। तस्मिन् शरीरे सर्वात्मकं सर्वज्ञं सर्व-शक्तिसंयुक्तं समस्तदेवतामयं सच्चिदानंदस्व-रूपं ब्रह्मात्मरूपेणानुप्राविष्टमिति * भावयेत् ।

इति भूतशुद्धिः ॥

---

* उपरोक्त विषय उत्कृष्ट योगाभ्यासियों और मंत्रतंत्रके तत्त्वज्ञ विद्वानोंके कामका है इस लिये इसका आशय संक्षेपसे लिखना अनुपयोगी समझकर इसे छोड दिया है ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुःसामानिछन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आंबीजं ह्रीं शक्तिः क्रौंकीलकं प्राणस्थापनेविनियोगः । ङं कं खं घं गं नभोवाय्वग्निजलभूम्यात्मने हृदयाय नमः । ञं चं छं झं जं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने शिरसे स्वाहा । णं टं ठं ढं डं श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट् । नं तं थं धं दं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुम् । मं पं फं भं बं वक्तव्यादानगमनविसर्गानंदात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् । शं यं रं वं लं हं षं क्षं सं बुद्धिमनोहंकारचित्तात्मने अस्त्राय फट् । एवं करन्यासं कृत्वा ततो नाभितः पादपर्यंतं आंनमः । हृदयतः नाभिपर्यंतं ह्रीं नमः । मूर्द्धादिहृदयपर्यन्तं क्रौंनमः । ततो हृदयकमले न्यसेत् । यं त्व-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गात्मने नमः वायुकोणे । रं रक्तात्मने नमः अग्निकोणे । लं मांसात्मने नमः पूर्वे । वं मेदात्मने नमः पश्चिमे । शं अस्थ्यात्मने नमः नैर्ऋत्ये । षं शुक्रात्मने नमः उत्तरे । हं प्राणात्मने नमः दक्षिणे । सं जीवात्मने नमः मध्ये एवं हृदयकमले न्यसेत् । ध्यानम्—रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पंच बाणान् । बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु शुभकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ १ ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥

टिप्पणी—१ भूतशुद्धि करनेमें प्राणवायुकी स्वच्छन्दता रोककर गति प्रवाह और गत्यावरोधादिके द्वारा जो उसको आक्रांत और स्वाधीन रखनेमें श्रम दियागया था उसको मिटाकर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तत्र संध्योपासनादिनित्यकर्मानंतरं भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा जपकर्ता प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात् ॥ ॐ तत्सदद्य मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा मम शरीरे ज्वराद्यमुकरोगनिरसनद्वारा सद्य आरोग्यलाभार्थं वा धनपुत्रयशःसौख्यादि अमुककामनासिद्धयर्थं श्रीमहामृत्युंजयदेवप्रीतिकामनया अमुकसंख्यापरिमितमहामृत्युंजयजपमहं करिष्ये । अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीत्र्यंबकरुद्रो देवता श्रींबीजं

—यथावत् प्राणवायुका संचार होतारहनेके हेतुसे यह प्राणप्रतिष्ठा की जाती है किन्तु यह भी ध्यान मात्रसे ही होती है ॥

१ जप करनेवाला संध्योपासनादि नित्यकर्म तथा भूतशुद्धि आदि पूर्वोक्त कर्म किये पीछे यह संकल्प करे ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हौंशक्तिः मम अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनीयोगः।
ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छ-न्दसे नमः मुखे। श्रीत्र्यंम्बकरुद्रोदेवतायै नमः हृदि । श्रींबीजाय नमः गुह्ये । हौंश-क्तये नमः पादयोः इति ऋष्यादिन्यासः ॥
करन्यासः–ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्य-म्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ हौं ॐ जूंसः

---

१ प्रत्येक प्रयोगमें पहले प्रतिज्ञा संकल्प फिर विनियोग फिर न्यास ध्यान किया जाता है। इस नियमके अनु-सार यहांभी पहले विनियोग करके वसिष्ठऋषये नमः शिरसि आदिसे शिर,मुख,हृदय, गुह्य और पांव इनसे न्यास करे।फिर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रांह्रीं अनामिकाभ्यांहुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। इति करन्यासः॥

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वःसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्

—ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः आदिका उच्चारण करतेहुए 'करन्यास' करै। अर्थात् मंत्रोच्चारण पूर्वक इनका स्पर्श करे।

१ पूर्वोक्त रीतिके अनुसार करन्यासकी तरह मंत्रोच्चारण

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् । ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय हांहीं कवचाय हुम् । ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः-साममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वलज्वल मां रक्षरक्ष अघोरास्त्राय फट् । इति ॥ अक्षरन्यासः—त्र्यं नमः दक्षिण-चरणाग्रे । बंनमः कंनमः यंनमः जांनमः दक्षि-णचरणसन्धिचतुष्केषु । मंनमः वामचरणाग्रे । हेंनमः सुंनमः गंनमः धिंनमः वामचरणसंधि-चतुष्केषु । पुंनमः गुह्ये । ष्टिंनमः आधारे ।

—पूर्वक हृदय, शिर, शिखा आदिको स्पर्श करे ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वंनमः जठरे। द्धंनमः हृदये। नंनमः कंठे। उंनमः दाक्षिणकराग्रे। वांनमः रुंनमः कंनमः मिंनमः दाक्षिणकरसान्धिचतुष्केषु। वंनमः वामकराग्रे। बंनमः धंनमः नां नमः मृंनमः वामकरसान्धिचतुष्केषु। त्यों नमः वदने। मुं नमः ओष्ठयोः। क्षींनमः घ्राणयोः। यंनमः दृशोः। मांनमः श्रवणयोः। मृंनमः भ्रुवोः। तां नमः शिरसि। इति अक्षरन्यासः॥

पदन्यासः– त्र्यंबकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः। सुगन्धिं दृशोः। पुष्टिवर्द्धनम् मुखे। उर्वारुकं कंठे। इव हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्योः गुह्ये। मुक्षीय ऊर्वोः। मा जान्वोः।

---

१ अक्षरन्यासमें मूलमंत्रके प्रत्येक अक्षरसे शरीरके प्रत्येक अंगको स्पर्श करके न्यास करना चाहिये। अंगोंके नाम स्पष्ट लिखे हैं। संधिचतुष्क अर्थात् हाथ पाँवमें जहां जहां जोड हैं वे चारों हैं और गुह्यस्थान छुपाहुआ अंग है॥ २ पदन्या-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अमृतात् पादयोः। इति पदन्यासः॥ध्यानम्–
हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं
परम् । अङ्कन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलास-
कान्तं शिवं स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटा-
भातं त्रिनेत्रं भजे ॥ १ ॥

–समें मूलमंत्रके पदोंसे शिर, भँवारे, नेत्र और मुख आदिका स्पर्श करता हुआ पदन्यास करे । न्यास करना जप करने योग्य होता है।जिसभांति युद्धभूमिसे विजयविभूति लानेके निमित्त युद्धार्थीको अस्त्रशस्त्रादि सब सामग्रीसे सुसज्जित होना पडताहै ठीक उसीतरह प्रयोगादिसे अभीष्टसिद्धि प्राप्त करनेके लिये अनुष्ठानीको भी भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, ऋष्यादिन्यास, अंगन्यास, करन्यास और वर्णन्यासादि बहुविध विधियोंसे शरीरको प्रयोगके योग्य करना पडता है और फिर तन्मय होके जिस देवतासे जो काम लेनाहो उसका तादृश ध्यान करना पडता है ॥

१ यहां अष्ट भुजावाले शिवजीका ध्यान किया है जो दो हाथोंमें अमृतके दो कलशलिये हुए हैं । अन्य दो हाथोंसे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मृत्युंजय महादेव त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥१॥
तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोहं सदा मृड ।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युंजयं मनुम् ॥२॥

[1] मूलमंत्रः—ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ ॥ १ ॥ एतन्मंत्रस्य यथासंख्यं प्रजप्य पुनर्न्यासं कृत्वा जपं भगवन्महामृत्युंजयदेवतायै समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं

अमृत रसको शिरमें लपेटते हैं तथा दो हाथोंसे अमृत घट गोदमें रख रहे हैं और दो हाथोंमें मृग और रुद्राक्षमाला धारण किये हुए हैं । ऐसे कैलासकांत-स्वच्छां-भोजगत-नवेंदुमुकटसे सुशोभित और त्रिनेत्र शिवजीसे अपने अभीष्ट सिद्धि और रक्षापानेकी प्रार्थना की है ॥

१ न्यासादि किये पीछे रुद्राक्षकी मालाको मूलमंत्रसे अभिमंत्रित करके मध्यमा और अंगुष्ठ इन दोनोंके मध्य-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ १ ॥

इति महामृत्युञ्जयजपविधिः समाप्तः ॥

–पर्वसे मणियोंको चलातेहुए एकाग्र चित्तसे दृढतापूवर्क उपरोक्त मंत्रके जप करे । और जप किये पीछे फिर पूर्वोक्त-रीतिसे अंगन्यास करके समाप्त करे । इस प्रकार आरंभसे समाप्ति पर्यन्त इस प्रयोगके करने करानेसे अवश्यही यथेच्छ फल मिलता है । शास्त्रोंमें लिखा है कि, देवासुर संग्रामके समय असुरोंके अधिक संहारसे अकुलाकर दैत्य जब पीठ फेरने लगे तब उनके गुरु शुक्राचार्यने अपने यज्ञशालामें इसी महामृत्युंजयके अनुष्ठानोंका आयोजन किया और मृत दैत्योंको सजीव करके युद्धार्थ पुनः प्रोत्साहित किये । इस कारण यह अनुष्ठान "अमृतसंजीवनी" नामसे भी विख्यात होगया ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

१२ ग्रन्थान्तरोक्तजपविधिः ।

ऊपर जो विधि लिखी गई है वह इस देशमें प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। और अनुष्ठानीलोगोंको विशेषतया यही अभ्यस्त होरही है। किन्तु 'मंत्रमहोदधि' आदि अनेकों ग्रन्थोंमें जो महामृत्युंजय जपविधि लिखी है उसमें और इसमें कुछ स्वरूपान्तर है अतएव सबके लाभके लिये यहाँ उस विधिको भी प्रगट करदेते हैं, वह 'महामृत्युंजयजप विधि' इस प्रकार है—

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवसिष्ठा ऋषयः । पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि । सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता । ह्रीं शक्तिः। श्रीं बीजम् । महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः । ऋष्यादिन्यासः—ॐ वामदेवकहोलवसिष्ठऋषिभ्यो नमः मूर्ध्नि । ॐ पंक्तिगायत्र्यनुष्टुप्छंदोभ्यो नमः वक्त्रे । ॐ सदाशिवमहामृत्युंजयरुद्रदेवतायै नमःहृदि । ॐ ह्रींशक्त्यै नमः लिंगे । ॐ श्रीबीजाय नमः पादयोः ॥ करन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः।ॐ ह्रौं ॐ जूंसःभूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चंद्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवःस्वः उर्वारुकमिवबन्धनात् ॐनमो भगवते रुद्राय त्रिपुरांतकाय ह्रां ह्रीं

श्रीलक्ष्मीधर-विद्या...
...प्रयाग (गढवाल-हिमालय)
CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri
व्यवस्थापक- पं. ...

अनामिकाभ्यांनमः।ॐहौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःमृत्योर्मुक्षीयॐनमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादिन्यासं कुर्यात् ॥ वर्णन्यासः—ॐ हौंॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यँनमःपूर्वमुखे।१।ॐहौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वः बंनमःपश्चिममुखे ॥ २ ॥ ॐहौंॐजूंसः भूर्भुवःस्वः कंनमः दक्षिण मुखे॥३॥ ॐहौंॐजूंसःभूर्भुवःस्वःयंनमः उत्तर मुखे ॥४॥ ॐहौं जूँसः भूर्भुवः स्वः जांनमः उरसि ॥५॥ ॐहौं ॐजूंसःभूर्भुवःस्वः मंनमः कण्ठे ॥६॥ ॐहौंॐजूंसः भूर्भुवः स्वःहें नमः मुखे ॥७॥ ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः सुंनमः नाभौ ॥ ८ ॥ ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः गंनमः हृदि ॥ ९ ॥ ॐहौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः धिंनमः पृष्ठे ॥१०॥ ॐहौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः पुंनमः कुक्षौ ॥११॥ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः ष्टिंनमः लिंगे ॥१२ ॥ ॐ हौं ॐजूंसःभूर्भुवः स्वःवंनमः गुदे ॥ १३ ॥ ॐहौं ॐजूंसःभूर्भुवः स्वः र्धंनमः दक्षिणोरुमूले ॥१४॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः नंनमः वामोरुमूले ॥ १५ ॥ ॐ हौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः उंनमः दक्षिणोरुमध्ये ॥ १६ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः वांनमः वामोरुमध्ये ॥ १७ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः रुंनमः दक्षिणजानुनि ॥ १८ ॥ ॐ हौंॐजूंसः भूर्भुवः स्वः

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कंनमः वामजानुनि ॥ १९ ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः
मिंनमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥२० ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः
वंनमः वामजानुवृत्ते ॥ २१ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः
बंनमः दक्षिणस्तने ॥ २२ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः
धंनमः वामस्तने॥२३॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भुर्भूवः स्वः नां नमः
दक्षिणपार्श्वे ॥ २४ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृंनमः
वामपार्श्वे ॥ २५ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः
दक्षिणपादे ॥ २६ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मुंनमःवाम
पादे ॥ २७ ॥ ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः
दक्षिणकरे ॥ २८ ॐ हौं जूंसः भूर्भुवः स्वः यं नमः वाम-
करे ॥२९॥ ॐ हौं जूंसः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षिणनासा-
याम् ॥ ३० ॥ ॐहौंॐ जूंसः भूर्भुवःस्वःमृंनमःवामनासायाम्
॥३१॥ ॐहौंजूंसः भूर्भुवःस्वःतां नमःमूर्ध्नि॥३२॥ पदन्यासः—
ॐ त्र्यंबकं शिरसि॥ॐ यजामहे भ्रुवोः॥ॐसुगंधिं नेत्रयोः ॥ॐ
पुष्टिवर्द्धनं मुखे॥ॐ उर्वारुकं गंडयोः॥ॐ इवहृदये॥ॐ बंधनात्
जठरे॥ॐमृत्योः लिंगे॥ॐ मुक्षीय ऊर्वोः॥ॐमा जान्वोः ॥ ॐ
अमृतात् पादयोः॥मूलेन व्यापकं कृत्वा ध्यायेत् । ध्यानम्—
हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरःसिञ्चन्तं कर-
योर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ । अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुज-
गतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्पीयूषोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युंजयं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्र्यंबकम् ॥११॥इतिध्यात्वा मूलमंत्रं जपेत्। इति ग्रंथान्तरोक्त जपविधिः ॥

१३ त्र्यक्षरीमन्त्रजपाविधिः ।

अस्य श्रीत्र्यक्षरीमृत्युंजयमंत्रस्य कहोल ऋषिःदेवी गायत्री छन्दः श्रीमृत्युंजयो देवता जूं बीजं सः शक्तिः अभीष्टसिध्यर्थे जपे विनयोगः । अंगन्यासः—कहोलऋषये नमःशिरसि । देवी गायत्री छंदसे नमः मुखे । मृत्युंजयदेवतायै नमः हृदि । जूं बीजाय नमः गुह्ये । सः शक्तये नमः पादयोः ॥ करन्यासः—सां अंगुष्ठाभ्यां नमः । सीं तर्जनीभ्यां नमः । सूं मध्यमाभ्यां नमः । सैं अनामिकाभ्यां नमः । सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ हृदयादि न्यासः—सां हृदि । सीं शिरसि । सूं शिखायै । सैं नेत्रत्रयाय । सौं कवचाय ।, सः अस्त्राय इति ॥ ध्यानम्—चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम् । कोटीरेन्दुगलत्सुधास्नुततनुं हारादि-

---

१ त्र्यक्षरी मंत्र " ॐजूंसः " इतनाही है सामान्यता इसीके जप होते हैं । किन्तु किसीके रक्षाके निमित्त करने हों तो " ॐ जूंसः अमुकं पालय २ सः जूं ॐ" और शत्रु रोगादि दूर करने हों तो " ॐजूंसः अमुकं नाशय २ सः जूं ॐ" इसके जप करने चाहिये यही विशेषता है ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भूषोज्वलं कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युंजयं भावयेत् ॥ १ ॥ इति । मूलमंत्रं प्रजप्य पुनर्न्यासादिकं विधाय जपं महामृत्युञ्जयदेवतायै समर्पयेत् ॥

इति त्र्यक्षरीमंत्रजपविधिः ।

इति श्रीहनूमानशर्म-संगृहीतमहामृत्युंजयमंत्रजपविधि समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम्-यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विषय आज ३० । ४० वर्षसे अधिक हुआ भारत-वर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपीहुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे--वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादिक संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर विक्रयार्थ तैयार रहते हैं । शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देश-भरमें विख्यात है । इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशन भी पृथक् काट दिया जाता है । ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभव है संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकता-नुसार पुस्तकोंके मँगानेमें त्रुटि न करना चाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है. 'सूचीपत्र' मंगा देखो ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम् प्रेस, कल्याण–मुंबई.

VENKATESHWAR STEAM PRESS SHOP

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri